ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।
ए प्रगटया पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार।। १० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह हमारे पूर्ण पारब्रह्म प्रगट हुए हैं जिनकी लीला अखण्ड हो गई है। इस लीला के रहस्य का विस्तार आगे होगा।

॥ प्रकरण ॥ ५१ ॥ चौपाई ॥ ५२६ ॥

राग श्री

सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूं।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अखण्ड परमधाम और धनी की पहचान का ज्ञान देने वाले मेरे सतगुरु श्री राजजी महाराज स्वयं हैं जिनके चरणों से मुझे सदा अखण्ड सुख प्राप्त होता है, क्योंकि मेरा इनसे आत्मा का अखण्ड नाता है।

ए जो माया लोक चौदे, सब त्रिगुन को विस्तार।
ए मोह अहंतें उपजें, ताथें छूटत नहीं विकार।। २ ।।

यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, विष्णु, महेश का ही विस्तार है जिनकी उत्पत्ति मोह-तत्व, अहंकार से हुई है, इसलिए किसी से भी माया का विकार छूटता नहीं है।

इत सास्त्र सब्द कई पसरे, ताको खोज करे संसार।
वाचा निवृत्ति मोह में, आड़ी भई निराकार।। ३ ।।

इस संसार में धर्म-ग्रन्थ बहुत हैं जिनसे दुनियां वाले खोज करते हैं। इन ग्रन्थों की वाणी से मोह तत्व से छुटकारा नहीं मिल सकता क्योंकि यह निराकार से आगे जाते ही नहीं हैं।

सुन्य निराकार पार को, खोज खोज रहे कई हार।
बोहोतों बहुबिध ढूंढ्या, पर किया न किने निरधार।। ४ ।।

शून्य, निराकार के पार बेहद को खोज-खोजकर कई लोग हार गए। उन्होंने कई प्रकार से ढूंढा, पर वह मिला किसी को नहीं।

सो बुधजीऐं सास्त्र ले, सबहीं को काढ़्यो सार।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार।। ५ ।।

जागृत बुद्धि (तारतम ज्ञान) ने सब शास्त्रों का सार निकाला और संसार के उद्धार के लिए अखण्ड रास्ते का सब निर्णय कर दिया।

जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन।
खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिए इन।। ६ ।।

जिन ब्रह्म सृष्टियों के वास्ते माया का संसार बना है, शास्त्रों का ज्ञान भी उन्हीं के वास्ते आया है। माया का खेल भी देखने वाले यही हैं और शास्त्रों के अर्थ का ज्ञान भी इन्हीं को है।

ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और।
बुध जी के रोसन थें, प्रकास होसी सब ठौर।। ७ ।।

इस माया को जिसने बनाया है वही इसके भेद जानता है। दूसरा क्या समझेगा? अब जागृत बुद्धि (तारतम) की वाणी से सब संसार को पता चल जाएगा।

Nijanand App

किल्ली ल्याए वतन थें, सब खोल दिए दरबार।
माया से न्यारा घर नेहेचल, देखाया मोहजल पार।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम से तारतम ज्ञान की कुन्जी लाकर हद, बेहद, अक्षर और अक्षरातीत तक के दरवाजे खोल दिए हैं। हमारा अखण्ड घर (परमधाम) माया से अलग निराकार के पार है, उसे बता दिया।

ब्रह्मसृष्ट जाहेर करी, बुधजीएं इत आए।
अछरातीत को आनन्द, सत सुख दियो बताए।। ९ ।।

बुधजी ने आकर ब्रह्मसृष्टियों की पहचान कराई और अक्षरातीत (धनी) के सच्चे (अखण्ड) सुख (आनन्द) को बताया।

सब्द सुनाए सुक व्यास के, मोहे खिन में कियो उजास।
उपनिषद अर्थ वेद के, ए गुझ कियो प्रकास।। १० ।।

शुकदेवजी और व्यासजी के वचनों के भेद एक क्षण में खोल दिए। वेदों और उपनिषदों के छिपे रहस्यों को भी जाहिर कर दिया।

इनसें सुध मोहे सब भई, संसे रह्यो न कोए।
बुधजी बिना इन मोह में, प्रकास जो कैसे होए।। ११ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मेरे सारे संशय मिट गए और पूरी पहचान हो गई। जागृत बुद्धि के बिना इस संसार सागर में अखण्ड ज्ञान कैसे मिल सकता था?

संगी जो अपने सनमंधी, सो भी गए मांहें भूल।
तो क्यों समझें जीव मोह के, जाको निद्रा मूल।। १२ ।।

जो परमधाम की अपनी सम्बन्धी ब्रह्मसृष्टि है वह भी इस खेल में आकर भूल गई, तो जीवसृष्टि जिनकी उत्पत्ति निराकार और मोह तत्व से है वह कैसे अखण्ड वाणी को समझ सकते हैं?

पिया मोहे अपनी जान के, अन्तर दई समझाए।
ना तो आद के संसे अब लों, सो क्योंकर मेटयो जाए।। १३ ।।

धनी ने मुझे अपनी अंगना जानकर सारे भेदों को समझा दिया, वरना जब से ब्रह्माण्ड बना है आज तक कोई किसी के संशय नहीं मिटा सका।

ए बीतक कहूं सैयन को, जाहेर देऊं बताए।
मोहे जगाई पिया ने, मैं देऊं सबे जगाए।। १४ ।।

इसकी हकीकत मैं अपने सुन्दरसाथ को स्पष्ट बता देती हूं। धनी ने मुझ अकेली को जागृत किया। मैं सब सुन्दरसाथ को जगा देती हूं।

ए खेल हुआ सैयों खातिर, और खातिर अछर।
सबके मनोरथ पूरने, देखाए तीनों अवसर।। १५ ।।

यह माया का खेल ब्रह्मसृष्टि और अक्षरब्रह्म के वास्ते बना है। सबकी मनोकामना पूर्ण करने के लिए बृज, रास और जागनी की तीनों लीलाएं तीन बार में दिखाईं।

Nijanand App

जब माया मोह न अहंकार, ना विस्तरे त्रिगुन।
ए दिल दे के समझियो, कहूंगी मूल वचन।। १६ ।।

जब माया, मोह तत्व, अहंकार और त्रिगुण कुछ भी नहीं था, उस समय के मूल वचनों को याद दिलाती हूं। इसे सुन्दरसाथजी ध्यान से समझना।

तब खेल हम मांगया, सो देखाया दो बेर।
तामें बृज में खेले पिया संग, बीच मोह के अंधेर।। १७ ।।

हमने जो उस समय धनी से खेल मांगा था उसे उन्होंने दो बार में दिखाया। एक में बृज की लीला अज्ञानता के अंधेरे में हमने धनी के साथ खेली।

काल माया देखी नींद में, आधी नींद माया जोग।
ताथें देखाई जगाए के, इत लेसी सबको भोग।। १८ ।।

उस बृज को हमने काल माया के ब्रह्माण्ड में देखा। उसके बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड में जहां धनी की सुध तो थी पर घर की सुध नहीं थी, इसलिए उस योगमाया को आधी नींद का ब्रह्माण्ड कहा है। यहां तीसरे ब्रह्माण्ड में अब सबको तारतम वाणी के ज्ञान से जगा देती हूं। सब साथ को बृज, रास, नौतनपुरी तथा परमधाम (अखण्ड घर) का आनन्द यहीं जागनी के ब्रह्माण्ड में मिलेगा।

इन लीला की जो आतमा, सो करसी सबे पेहेचान।
आवत दौड़े अंकूरी, ए ताए मिलसी निसान।। १९ ।।

इन लीलाओं की जो आत्माएं (ब्रह्मसृष्टियां) हैं, उन सबको यह पहचान हो जाएगी। उन्हें ही इन सारे रहस्यों के भेद खुलेंगे और वह परमधाम के निसबती दौड़ते चले आएंगे।

अखंड सुख जाहेर कियो, मूल बुध प्रकासी।
देत देखाई जैसे दुनियां, पर अछरातीत के वासी।। २० ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से परमधाम के अखण्ड सुख जाहिर कर दिए हैं। संसार में यह ब्रह्मसृष्टियां दुनियां के तनों में दुनियां जैसी ही दिखाई देती हैं। पर यह हकीकत में अक्षरातीत धाम की रहने वाली हैं।

खेल किया पेहेले बृज में, खेल दूजा वृन्दाबन।
उमेद रही तो भी नेक सी, ताथें एह उतपन।। २१ ।।

पहला खेल बृज में खेला और दूसरा रास का खेल अखण्ड वृन्दावन में। फिर भी थोड़ी-सी चाहना बाकी रहने के कारण यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड हुआ।

बृज रास ए सोई लीला, सोई पिया सोई दिन।
सोई घड़ी ने सोई पल, वैराट होसी धंन धंन।। २२ ।।

परमधाम की उसी साइत में (उसी घड़ी में) हमारे पिया ने बृज दिखाया, रास की लीला दिखाई और उसी साइत और उसी पल में इन चौदह लोकों को देखने के बाद अखण्ड कर देंगे।

सखी एक दूजी को ढूंढहीं, आई जुदी जुदी इन बेर।
प्रेम प्यासी पिया की, लई जो विरहा घेर।। २३ ।।

इस खेल में सखियां अलग-अलग ठिकाने में आई हैं और वह एक दूसरे को ढूंढ रही हैं। वह पिया के प्रेम की प्यासी हैं और धनी से बिछुड़ने के विरह में डूबी हैं।

Nijanand App

अब ए लीला क्यों छानी रहे, सखियां मिली सब टोले।
पल पल प्रकास पसरे, आगम ही आगम बोले।। २४ ।।

अब इस जागनी की लीला में सखियां सभी टोले-टोले (समूह) मिल रही हैं, इसलिए यह लीला छिपी नहीं रहेगी। इस तरह से इस लीला का ज्ञान पल-पल में फैलेगा, ऐसी भविष्यवाणी वेद और शास्त्रों ने की है।

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।। २५ ।।

चौबीस अवतारों के बीच अक्षरातीत की लीला किसी ने जाहिर नहीं की। श्री कृष्ण के तीन अवतारों के भेद में परमधाम की पहचान और ब्रह्मलीला छिपी हुई थी। अब अपने समय पर जागृत बुद्धि के जाहिर होने से सब रहस्य जाहिर हो गए।

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।। २६ ।।

अब ब्रह्मलीला की और मेरे अखण्ड स्वरूप की पहचान सबको देकर वैराट को अखण्ड सुख देंगे। श्री राजजी महाराज के इस संसार में आने पर दो संसारी नाम हुए। पहले तन का नाम श्री कृष्ण और दूसरे तन का श्री देवचन्द्रजी। इन दोनों के नामों को मिटाकर नया शोभायुक्त प्राणनाथजी के नाम से जाहिर होंगे (मैं प्राणनाथ हूं)।

ए नित लीला बुध जी, करसी बड़ो विलास।
दया भई दुनियां पर, होसी सबे अविनास।। २७ ।।

बुध (जागृत बुद्धि) के स्वरूप (श्री प्राणनाथजी) की अखण्ड लीला का बड़ा आनन्द होगा। यह दुनियां पर मेहर करके सबको अखण्ड करेंगे।

सुर असुर ब्रह्मांड में, मिलकर गावसी ए सुख।
इन लीला को जो आनन्द, वरन्यो न जाए या मुख।। २८ ।।

हिन्दू-मुसलमान इस ब्रह्माण्ड में मिलकर इस अखण्ड सुख का आनन्द लेंगे। इस आनन्द के सुख का वर्णन इस मुख से नहीं होता।

सब पर हुआ कलस, प्रेम आनन्द भरपूर।
महामत मोह अहं उड़्यो, ऊग्यो अखंड वतनी सूर।। २९ ।।

यह विजयाभिनन्दन बुधजी श्री प्राणनाथजी सबके ऊपर कलश के समान शोभित होंगे। अपार प्रेम और आनन्द देंगे। श्री महामतिजी कहते हैं कि अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है और मोह तत्व और अहंकार की अज्ञानता उड़ गई है।

॥ प्रकरण ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ ५५५ ॥

राग श्री

धनी जी ध्यान तुमारे रे।
धनी मेरे ध्यान तुमारे, बैठे बुधजी बरस सहस्र चार।
छे सै साठ बीता समे, दुनियां को भयो आचार।। १ ।।

हे धनी जी! आपके आगमन के इन्तजार में रास की समाप्ति के बाद से हरिद्वार में सम्वत् १७३५ तक चार हजार छः सौ साठ वर्ष बीत गए। वही अक्षरब्रह्म मेड़ते में श्री प्राणनाथजी के तन में बैठकर अब हरिद्वार में दुनियां के आचार्य विजयाभिनन्द बुध के रूप में जाहिर हुए।

Nijanand App